श्री कृष्ण का अनोखा जन्म और विलक्षण जीवन

आजकल नेताओं तथा ''महात्माओं'' के जन्मदिन मनाने का काफी रिवाज है। आये दिन भारत में कभी विवेकानन्द जयन्ती, कभी महावीर जयन्ती, कभी गाँधी जयन्ती, कभी तिलक जयन्ती, कभी राष्ट्रपति जी का जन्म दिन और कभी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्मदिन मनाया जाता है। इन व्यक्तियों और जयन्तियों पर आप विचार करेंगे तो देखेंगे कि इनमें से कई व्यक्ति तो केवल राजनीति ही के क्षेत्र में प्रतिभाशाली माने गये है और अन्य कई केवल धार्मिक क्षेत्र में। दोनेा क्षेत्रों में समान रूप से किसी का प्रभुत्व रहा हो, ऐसा शायद कोई भी व्यक्ति नहीं मिलेगा। मिल भी जायेगा तो भी वह पूज्य कोटि का नहीं होगा। परन्तु श्री कृष्ण, जिनका जन्मदिन भारतवासी हर वर्ष ''श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव'' नाम से मनाते हैं, के जीवन में आपको यही विलक्षण स्पष्ट रूप से मिलेगी। श्री कृष्ण निर्विवाद रूप से एक अत्यन्त महान धार्मिक व्यक्ति भी थे और उन्हें राजनीतिक पदवी प्रशासनिक कुशलता भी खूब प्राप्त थी। अत: श्री कृष्ण अपने चित्रों तथा मन्दिरों में सदैव प्रभामण्डल से सुशोभित तथ रत्न जड़ित स्वर्णमुकुट से भी सुसज्जित दिखाई देते है। श्री कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव हमें धार्मिक और राजनीतिक दोनों सत्ताओं की पराकाष्ठा को प्राप्त श्री कृष्ण देवता की याद दिलाता है। आज जिन राजनीतिक नेताओं का जन्म दिन मनाया जाता है, वे प्राय:श्री कृष्ण अपने चित्रों तथा मन्दिरों में सदैव प्रभामण्डल से सुशोभित तथा रत्न जड़ित स्वर्ण मुकुट से सज्जित नहीं हैं, वे ''महाराजधिराज-श्री'' कि उपाधि से तथा ''पवित्र-श्री'' अथवा ''पुज्य श्री''की उपाधि से अर्थात दोनों उपाधियों से, युक्त नहीं हैं। अत: श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव इस दृष्टिकोण से अनुपमेय है, क्योंकि श्री कृष्ण को तो भारत के राजा भी पूजते हैं और महात्मा भी महान एवं पूज्य मानते हैं।

श्रीकृष्ण जन्म से ही महान थे

इस प्रसंग में ध्यान देने के योग्य एक बात यह भी है कि दूसरे जो प्रसिद्ध व्यक्ति हुए हैं कि जिनके जन्मदिन एक सार्वजनिक उत्सव बन गये हैं, वे कोई जन्म ही से पूज्य या महान नहीं थे। उदाहरण तौर पर विवेकानन्द सन्यास लेने के बाद ही महान माने गये। महात्मा गाँधी प्रौढ़ अवस्था में ही एक राजनीतिक नेता अथवा एक सन्त के रूप में प्रसिद्ध हुए। यही बात तुलसी, कबीर, दयानन्द, वर्द्धमान महावीर आदि-आदि के बारे में भी कही जा सकती है। परन्तु श्री कृष्ण की यह विशेषता है कि उनके जन्म के समय भी उनकी माता को विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ है और वे जन्म ही से पूज्य पदवी को प्राप्त थे। आप उनके किशोरावस्था के चित्रों में भी उन्हें दोनों ताजों से सुशोभित देखते होंगे। उनकी बाल्यावस्था के जो चित्र मिलते हैं, उनमें भी वे मोर पंख, मणि-जड़ित आभूषण तथा प्रभामण्डल से युक्त देखे जाते है। आज भी जन्माष्टमी के दिन भारत की माताएं पालने या पंगुरे में श्री कृष्ण की किशोरावस्था की मूर्ति या किसी चेतन प्रतिनिधि के रूप से बालक को लिटाकर उसे बहुत भावना से झुलाती हैं। आज भी श्रीकृष्ण की बाल्यवस्था की झांकियां लोग बहुत चाव और सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। अन्य किसी भी प्रसिद्ध व्यक्ति को इस प्रकार जन्म ही से प्रभामण्डल से युक्त चित्रित नहीं किया जाता।

श्री कृष्ण 16 कला सम्पूर्ण और सुन्दर थे

यह भी एक सत्य है कि अन्य जिन व्यक्तियों की जयन्तियां मनाई जाती है, वे 16 कला सम्पूर्ण नही थे। केवल श्री कृष्ण ही सोलह कला सम्पूर्ण देव हुए हैं। श्री कृष्ण में शारीरिक आरोग्यता और

सुन्दरता की आत्मिक बल और पवित्रता तथा दिव्य गुणों की अत्यन्त पराकाष्ठा थी। मनुष्य चोले में जो सर्वोत्तम जन्म हो सकता है, वह उनका था। अन्य कोई भी व्यक्ति शारीरिक या आत्मिक दोनों दृष्टिकोणों से इतना सुन्दर, आकर्षक, प्रभावशाली और प्रभुत्वशाली नहीं हुआ। सतयुग से लेकर कलियुग के अन्त पर्यन्त अन्य कोई भी इतना महान न हुआ है, न हो सकता है। श्री कृष्ण का व्यक्तित्व इतना महान आकर्षक, था कि यदि आज भी वह इस पृथ्वी पर कुछ देर के लिए प्रगट हो जायें तो क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या ईसाई, क्या यहूदी सभी उनके सामने नत मस्तक हो जायेंगे और मुग्ध होकर छवि निहारते खड़े रहेंगे।

योगीराज कृष्ण

श्रीमद्भागवत में लिखा है कि श्री कृष्ण योगीराज थे, वह योगाभ्यास किया करते थे। परन्तु सोचने की बात है कि योगाभ्यास या अन्य कोई पुरूषार्थ तो किसी अप्राप्त सिद्धि के ही लिए किया जाता है, परन्तु श्री कृष्ण तो पूर्णत: तृप्त थे क्योंकि उन्हें धर्म, धन और जीवनमुक्ति सभी श्रेष्ठ फल प्राप्त थे, सोलह कला सम्पूर्ण देवपद से भला और क्या उच्च प्राप्ति हो सकती थी कि जिसके लिए श्री कृष्ण योगाभ्यास करते? श्री कृष्ण के जीवन में तो किसी दिव्य गुण की, आत्मिक पवित्रता या शक्ति की या श्रेष्ठ भाग्य के अन्तर्गत गिनी जाने वाली अन्य किसी वस्तु, भोग्य, आयुष्य आदि की कमी नहीं थी कि जिसकी प्राप्ति के लिए वह योगाभ्यास करते। अतएव विवेक द्वारा तथा ईश्वरीय महावाक्यों द्वारा स्पष्ट है कि वास्तव में श्री कृष्ण ने अपने पूर्व जन्म में अर्थात श्री कृष्ण पद प्राप्त होने से पहले वाले जन्म में योगाभ्यास किया था।

उक्ति प्रसिद्ध है कि ईश्वरीय ज्ञान द्वारा ''नर को श्री नारायण और नारी को श्री लक्ष्मी पद की प्राप्ति होती है'' तो स्पष्ट है कि श्री कृष्ण अपने श्री नारायण पद की प्राप्ति से पहले वाले जन्म कें साधारण नर रहे होंगे और उसी जीवन में उन्होंने गीता का ज्ञान की धारणा की होगी। गीता में यह ईश्वरीय वाक्य है कि ''हे वत्स, इस ज्ञान और योग द्वारा तू स्वर्ग में राजा बनेगा'' और कि तू इस योग द्वारा श्रीमानों के घर में जन्म लेगा। इससे सिद्ध है कि 'श्री' की देवोचित उपाधि का अधिकारी बनने से पूर्व तथा वैकुण्ठ का देवराज पद प्राप्त किया करते हैं।

अतएव आज लोग जन्माष्टमी का उत्सव मनाते हैं तो उन्हें इस ओर भी ध्यान देना चाहिए कि श्री कृष्ण ने गीता-ज्ञान तथा सहज राजयोग के अभ्यास द्वारा ही श्रेष्ठ पद प्राप्त किया था। परन्तु आज होता क्या है कि लोग श्रीकृष्ण का गायन-पूजन तो करते हैं और उनकी महिमा तथा महानता का बखान भी करते हैं परन्तु जिस सर्वोत्तम पुरूषार्थ द्वारा उन्होंने वह महानता प्राप्ति की थी और पदम तुल्य जीवन बनाया था, उस पुरूषार्थ पर अथवा ज्ञान योग रूपी साधन पर वे ध्यान नहीं देते। वे यह नहीं सोचते कि श्री कृष्ण हमारे मान्य पूर्वज थे, अतएव हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनके ऊँचे जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन भी वैसा उच्च बनाने का यथार्थ पुरूषार्थ करें।

श्री कृष्ण का शुभागमन कब होगा

आज लोग जन्माष्टमी का उत्सव मनाते हैं तो बिजली के सैंकड़ों बल्ब जलाकर खूब उजाला करने का यत्न करते हैं। परन्तु आज आत्मा रूपी बल्ब तो फ्यूज हो चुका है। आज बाहर तो रोशनी की जाती है परन्तु स्वयं आत्मा रूपी परन्तु स्वयं आत्मा रूपी चिराग के तले अंधेरा है और उस अन्धेरे में विकार रूपी चोर छिपे बैठे हैं। अत: आज आवश्यकता है नव चेतना की, अपने जीवन के नव निर्माण की, अपने प्राणों में नव प्राण की, अपने घर गृहस्थ में, नेय विधि-विधान की, नये एवं उज्जवल विचारों की, जीवन में नई

उमंग नई तरंग पैदा करने वाली एक नई तान की । तब यहाँ नई जमीन और नया इन्सान बनेगा, नई दुनियां और नया जहान बनेगा। उस नये वितान में नये वितान में नये तरीके से श्री कृष्ण का शुभागमन होगा, सुखद आगमन होगा, स्वर्गिक शासन होगा।

ऐसी जन्माष्टमी मुबारिक

उस जन्माष्टमी के लिए हम आपको पेशगी मुबारिक देते हैं, अग्रिम बधाईयां कहते हैं। द्वापर युग से लेकर अब तक आप जिस प्रकार जन्माष्टमी मनाते आये हैं, वह कोई प्रैक्टिकल मनाना नहीं था। परन्तु अब जब भारतवासी सच्चे गीता ज्ञान की बंसी सुनकर आनन्द रस में मस्त होंगे और राजयोग द्वारा योगीराज बनेंगे तब निश्चय ही निकट भविष्य में श्री कृष्ण का पावन एवं दैवी जन्म होगा। वह होगी श्री कृष्ण की वास्तविक एवं सजीव झांकी। वह होगी सोने की द्वारिका। वह होगा वैकुण्ठनाथ का सुखद वैकुण्ठ अथवा क्षीर सागर। उस सुन्दर एवं मनमोहक झांकी को देखने के योग्य बनने के लिए अब हमें अभी अपनी दृष्टि को दिव्य जन्म देना होगा, स्वयं को ज्ञान योग के चन्दन से तिलक देना होगा। इस शुद्ध पुरूषार्थ को यदि हम करने की प्रेरणा इस बार की जन्माष्टमी से लेंगे तो निश्चय ही यह जन्माष्टमी हमारे लिए स्वर्गारोहण के लिए सोपान सिद्ध होगी। ऐसे शुभ जन्माष्टमी के लिए एक बार फिर पेशगी मुबारिक।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com